

श्रीमज्जिनागमे प्रोक्तो ब्रह्मासौ पञ्चधा ध्रुवम्। मोक्षे तथाऽऽत्मनिज्ञाने चारित्रे वृषभप्रभुः ॥२१॥
 अन्यथा न परो ब्रह्मा विद्यते भुवनत्रये। रागादिदूषितः कामी कथं देवो भवेद्भुवि ॥२२॥
 यस्तु रागादिभिर्मुक्तो लोकालोकप्रकाशकः। केवलज्ञानसच्चक्षुः स मे ब्रह्मा वृषध्वजः ॥२३॥
 यो जानात्यखिलं जगत्त्रयमिदं सत्केवलज्ञानभाक् भव्याम्भोरुहभास्करोतिचतुर संसारनिस्तारकः।
 ब्रह्मा श्रीवृषभेश्वरो गुणनिधिः स्वर्गापवर्गप्रदः स स्यान्मे भवशान्तये शुचितरो देवेन्द्रवर्यैः स्तुतः ॥२४॥
 इति कथाकोशे लौकिकस्य ब्रह्मणः कथा समाप्ता।

३९. परिग्रहाद्भीतस्य धनदत्तस्य कथा

नत्वा निर्ग्रन्थनाथेशं श्रीजिनं परमेश्वरम्। ग्रन्थोत्पन्नं भयं प्राप्तौ भ्रातरौ तत्कथां ब्रुवे ॥१॥
 दशार्णविषये रम्ये पुरे चैकरथाभिधे। धनदत्तोभवच्छ्रेष्ठी धनदत्ता प्रिया तयोः ॥२॥
 संजातौ धनदेवाख्यधनमित्रौ सुतोत्तमौ। धनमित्राभवत्पुत्री स्वरूपगुणमण्डिता ॥३॥
 धनदत्ते मृते तस्मिन्तौ पुत्रौ पापकर्मणा। दारिद्र्येण महाकष्टं पीडितौ शर्महारिणा ॥४॥

आत्मा को निजस्वरूप में स्थिर करने वाला है। वह अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन अवस्थाओं से पाँच प्रकार का है। इनके सिवा संसार में कोई ब्रह्मा नहीं है क्योंकि राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया लोभ आदि दोषों से युक्त कभी ब्रह्मा-देव हो ही नहीं सकता किन्तु जो इन रागादि दोषों से रहित हैं, लोक और अलोक जानने वाले हैं और केवलज्ञानरूपी नेत्र से युक्त हैं वे ही ऋषभ भगवान् मेरे सच्चे ब्रह्मा हैं ॥१८-२३॥

वे परम पवित्र आदिनाथ जिनेन्द्र मुझे संसार के दुःखों से छुड़ाकर शांति प्रदान करें, जो भव्यजनरूपी कमलों को प्रफुल्लित करने के लिए सूरज के समान हैं, संसार-समुद्र पार करने वाले हैं, गुणों के समुद्र हैं, स्वर्ग और मोक्ष का पवित्र सुख देने वाले हैं, इंद्रादि देवों द्वारा पूज्य हैं और केवलज्ञान द्वारा सारे संसार के जानने और देखने वाले हैं ॥२४॥

३९. परिग्रह से डरे हुए दो भाइयों की कथा

धन, धान्य, दास, दासी, सोना, चाँदी आदि जो संसार के जीवों को तृष्णा के जाल में फँसाकर कष्ट पर कष्ट देने वाले हैं ऐसे परिग्रह से माया, ममता छोड़ने वाले जो साधु-सन्त हैं, उनसे भी जो ऊँचा हैं, जिनके त्याग से आगे त्याग की कोई सीमा नहीं, ऐसे सर्वश्रेष्ठ जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर परिग्रह से डरे हुए दो भाइयों की कथा लिखी जाती है ॥१॥

दशार्ण देश में बहुत सुन्दर एकरथ नाम का एक शहर था। उसमें धनदत्त नाम का सेठ रहता था। इसकी स्त्री का नाम धनदत्ता था। इसके धनदेव और धनमित्र ऐसे दो पुत्र और धनमित्रा नाम की सुन्दर लड़की थी ॥२-३॥

धनदत्त की मृत्यु के बाद इन दोनों भाइयों के कोई ऐसा पापकर्म का उदय आया, जिससे

कौशाम्बीं नगरीं गत्वा प्रणम्य निजमातुलम्। ऊचतुः साश्रुपातं च स्वपितुर्मरणं तदा ॥५॥
 मातुलोपि ततो धीमान् श्रुत्वा तद्वृत्तकं तयोः। समुद्धीर्य शुभैर्वाक्यैरष्टानर्घ्यमणीन्ददौ ॥६॥
 बन्धुत्वं तद्व्यालुत्वं गम्भीरत्वं तदेव च। अर्थिनां यन्निजैर्वित्तैर्भवेदाशाप्रपूरणम् ॥७॥
 तौ तान्मणीन्समादाय मार्गे तल्लोभतस्तराम्। चिन्तयामासतुश्चित्ते मारणं च परस्परम् ॥८॥
 ततः स्वपुरसानिर्ध्वं समागत्य स्वमानसे। पश्चातापं विधायोच्चैस्तौ प्रकाश्य मनोमलम् ॥९॥
 क्षिप्त्वा वेत्रवतीनद्यां तान्मणीन्गृहमागतौ। मत्त्येन गलितास्ते तु मांसं मत्वा सुपापिना ॥१०॥
 ततोसौ धीवरेणैव हतस्तोयचरः पुनः। तयोर्मातुः करे प्राप्ता मणयः कर्मयोगतः ॥११॥
 तदासौ धनदत्तोपि मणीनादाय मानसे। पुत्रपुत्रीमहाघातं चिन्तयामास लोभतः ॥१२॥
 पुनर्निन्दां निजां कृत्वा स्वपुत्र्यै संददौ मणीन्। गृहीत्वा धनमित्रा च महापापप्रमोहिता ॥१३॥
 सापि स्वभ्रातृमातृणां चित्ते धत्ते स्म मारणम्। अहो कष्टं कुधीर्लोभो जन्तूनां पापकारणम् ॥१४॥
 ततस्तया निजे चित्ते पश्चातापं विधाय च। भ्रातृभ्यां मणयो दत्ता कष्टकोटिविधायकाः ॥१५॥

इनका सब धन नष्ट हो गया, ये महा दरिद्र बन गए। कुछ सहायता मिलेगी इस आशा से ये दोनों भाई अपने मामा के यहाँ कौशाम्बी गए और इन्होंने बड़े दुःख के साथ पिता की मृत्यु का हाल मामा को सुनाया। मामा भी इनकी हालत देखकर बड़ा दुःखी हुआ। उसने अनेक प्रकार समझा-बुझाकर इन्हें धीरज दिया और साथ ही आठ कीमती रत्न दिये, जिससे कि ये अपना संसार चला सकें। सच है, यही बन्धुपना है, यही दयालुपना है और यही गम्भीरता है जो अपने धन द्वारा याचकों की आशा पूरी की जाए ॥४-७॥

दोनों भाई रत्नों को लेकर अपने घर की ओर खाना हुए। रास्ते में आते-आते इन दोनों की नियत उन रत्नों के लोभ से बिगड़ी। दोनों ही के मन में परस्पर के मार डालने की इच्छा हुई इतने में गाँव पास आ जाने से इन्हें सुबुद्धि सूझ गई। दोनों ने अपने-अपने नीच विचारों पर बड़ा ही पश्चाताप किया और परस्पर में अपना विचार प्रकट कर मन का मैल निकाल डाला। ऐसे पाप विचारों के मूल कारण इन्हें वे रत्न ही जान पड़े। इसलिए उन रत्नों को वेत्रवती नदी में फेंककर ये अपने घर पर चले आए। उन रत्नों को मांस समझकर एक मछली निगल गई यही मछली एक धीवर के जाल में आ फँसी। धीवर ने मछली को मारा। उसमें से वे रत्न निकले। धीवर ने उन्हें बाजार में बेच दिया। धीरे-धीरे कर्मयोग से वही रत्न इन दोनों भाईयों की माँ के हाथ पड़े। माता ने उनके लोभ से अपने लड़के-लड़की को ही मार डालना चाहा परन्तु तत्काल सुबुद्धि उपज जाने से उसने बहुत पश्चाताप किया और रत्नों को अपनी लड़की को दे दिये। धनमित्रा की भी यही दशा हुई उसकी भी लोभ के मारे नियत बिगड़ गई उसने माता, भाई आदि की जान लेनी चाही। सच है—**संसार में सबसे बड़ा भारी पाप का मूल लोभ है।** अन्त में धनमित्रा को भी अपने विचार पर बड़ी घृणा हुई और उसने फिर उन रत्नों को अपने भाइयों के हाथ दे दिया। वे उन्हें पहचान गए। उन्हें रत्नों के प्राप्त होने का हाल जानकर बड़ा ही वैराग्य हुआ। उसी समय वे संसार की सब माया-ममता छोड़कर, जो कि

तौ तान्मणीन्यरिज्ञात्वा महावैराग्ययोग्यतः। त्यक्त्वा परिग्रहं सर्वं महाक्लेशस्य कारकम् ॥१६॥
 स्वमातृभगिनीयुक्तौ नत्वा दमधराभिधम्। मुनीन्द्रं परया भक्त्या स्वर्गमोक्षसुखप्रदम् ॥१७॥
 दीक्षामादाय जैनेन्द्रीं सुरेन्द्राद्यैः समर्चिताम्। जातौ मुनी जगत्पूज्यौ निजात्मपरतारकौ ॥१८॥
 मत्तैवं भवभूरिदुःखजनकं लोभं महापापदं मातृभ्रातृकुटुम्बवञ्चनगृहं त्यक्त्वा त्रिधा धार्मिकैः।
 श्रीमज्जैनमते जगत्त्रयहिते धर्मे सुशर्मप्रदे कर्तव्यं सुमनो दृढं प्रतिदिनं शुद्धं महाश्रेयसे ॥१९॥
 इति कथाकोशे परिग्रहाद्भयमिति कथा समाप्ता।

४०. धनाद्भीतस्य सागरदत्तस्य कथा

प्रणम्य परमात्मानं श्रीजिनं केवलेक्षणम्। जातं भयं धनाच्चेति कथयामि कथानकम् ॥१॥
 कौशाम्ब्यां धनमित्राख्यधनदत्तादयो मुदा। वाणिज्येन वणिक्पुत्रा निर्गता राजगेहकम् ॥२॥
 तत्स्करैश्च महाटव्यां पापिष्ठैस्तद्धनं हृतम्। हानिलोके विपुण्यानामुद्यमेऽपि भवेद्ध्रुवम् ॥३॥
 चौरास्तेऽपि धनार्थं च मारणार्थं परस्परम्। रात्रौ चक्रुर्विषाहारं हा कष्टं दुष्ट चेष्टितम् ॥४॥
 दस्यवस्ते तदाहारं भुक्त्वाशु प्राणनाशकम्। मृत्युं प्रापुः प्रकष्टेन क्व भवेन्पापिनां शुभम् ॥५॥

महा दुःख का कारण है, दमधर मुनि के पास दीक्षा के लिए गए। इन्हें साधु हुए देखकर इनकी माता और बहिन भी आर्यिका हो गई आगे चलकर ये दोनों भाई बड़े तपस्वी महात्मा हुए। अपना और दूसरों का संसार के दुःखों से उद्धार करना ही एक मात्र इनका कर्तव्य हो गया। स्वर्ग के देवता और प्रायः सब ही बड़े-बड़े राजा-महाराजा इनकी सेवा-पूजा करने को आने लगे ॥८-१८॥

यह लोभ संसार के दुःखों का मूल कारण और अनेक कष्टों का देने वाला है, जो माता, पिता, भाई, बहिन, बन्धु, बान्धव आदि के परस्पर में ठगने और बुरे विचारों के उत्पन्न करने की इच्छा करते हैं, उन्हें चाहिए कि वे इस पाप के बाप लोभ को मनसा, वाचा, कर्मणा छोड़कर संसार का हित करने वाले और स्वर्ग तथा मोक्ष का सुख देने वाले जिनेन्द्र भगवान् के उपदेश किए परम पवित्र धर्म में अपने मन को दृढ़ करने का यत्न करें ॥१९॥

४०. धन से डरे हुए सागरदत्त की कथा

केवलज्ञानरूपी उज्ज्वल नेत्र और तीनों लोक को देखने और जानने वाले ऐसे जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर धन के लोभ से डरकर मुनि हो जाने वाले सागरदत्त की कथा लिखी जाती है ॥१॥

किसी समय धनमित्र, धनदत्त आदि बहुत से सेठों के पुत्र व्यापार के लिए कौशाम्बी से चलकर राजगृह की ओर रवाना हुए। रास्ते में एक गहन वन में चोरों ने इन्हें लूट-लिया। इनका सब माल-असबाब छीन-छानकर वे चलते हुए। सच है, जिनके पल्ले में कुछ पुण्य नहीं होता। वे कोई भी काम करें, उन्हें नुकसान ही उठाना पड़ता है ॥२-३॥

उधर धन पाकर चोरों की नियत बिगड़ी। सब परस्पर में यह चाहने लगे कि धन मेरे ही हाथ पड़े और किसी को कुछ न मिले और इसी लालसा से एक-एक के विरुद्ध जान लेने की कोशिश करने